आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2017
वर्ष 3, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2017, पृ. 37–44

वैश्वीकरणः सिद्धान्त एवं अवधारणाऐं

श्रीपाल चौहान

वैश्वीकरण एक बहु–आयामी और बहु–दिशात्मक प्रकिया है जो विभिन्न राष्ट्रों और व्यक्तियों को राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से एक बृहद् समुदाय में एकीकृत कर रही है। यह एक ऐसी निरन्तर प्रक्रिया है, जिसके तहत क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, समाज एवं संस्कृति का समन्वय विनिमय के वैश्विक नेटवर्क से हो गया है। वैश्वीकरण दुनिया के विभिन्न देशों और लोगों का घनिष्ठ समन्वय है, जो परिवहन एवं संचार की लागतों में लाई गई भारी कमी के परिणामस्वरूप हो पाया है और इसके फलस्वरूप वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह मे कृत्रिम रूकावटें समाप्त की गयी है और अपनी सीमा के परे लोगों का आना–जाना बढ़ा है (स्टिग्लिटज, 2003)। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से आज विश्व का कोई भी देश अछूता नहीं रह गया है। प्रारम्भ में वैश्वीकरण को विकासशील देशों को प्रभावित करने वाली एक आर्थिक प्रक्रिया के रूप में देखा गया परन्तु पिछले एक दशक में इस प्रक्रिया ने गति पकड़ी तथा धीर–धीरे इसने सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करना प्रारम्भ कर दिया। वैश्वीकरण को परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो विश्व के सभी क्षेत्रों जैसे–सामाजिक, प्रौद्योगिकी, राजनीतिक, संचार माध्यमों, संस्कृति एवं पर्यावरण आदि को प्रभावित करती है। पिछले दो दशकों में समस्त विश्व में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने न केवल अर्थव्यवस्था में अनेक परिवर्तन किये हैं वरन जनसंचार के साधनों को भी वैश्विक स्तर पर विस्तारित करने में पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये हैं। नयी संचार तकनीकियों ने विश्व के धार्मिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों को तो प्रभावित किया ही है वरन लोगों के जीवन स्तर में भी आमूल–चूल परिवर्तन ला दिया है। वैश्वीकरण को गतिमान बनाने में नवीन संचार प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है (सिंह, 2004)।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वैश्वीकरण के सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं का विश्लेषण करना है। इस शोध पत्र को छः भागों में बाँटा गया है। प्रथम एवं द्वितीय भाग में वैश्वीकरण के अर्थ एवं परिभाषाओं को स्पष्ट किया गया है जबकि तृतीय एवं चतुर्थ भाग में वैश्वीकरण की विशषेताओं एवं उसके अनेक आयामों का अध्ययन एवं विश्लेशण किया गया है। शोध पत्र के पाँचवे एवं छठे भाग में वैश्वीकरण की अध्ययन पद्धतियों एवं निष्कर्षों को समाहित किया गया है।

डॉ. श्रीपाल चौहान, *एसोसिएट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान विभाग,* महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, करौंदी, कटनी (म.प्र.) **drspchauhan14@gmail.com**

1. सामान्य शब्दकोश एवं विश्वकोश में वैश्वीकरण का अर्थ–

न्यू वर्ल्ड एनसाइक्लोपेडिया ने 'वैश्वीकरण' शब्द के इतिहास और उसकी अवधारणा को इस प्रकार प्रस्तुत किया है–''वैश्वीकरण'' शब्द सर्वप्रथम स्पेक्टेटर पत्रिका के 1962 में प्रकाशित अंक में प्रकट हुआ था। परन्तु अंग्रेजी भाषा के प्रतिदिन के व्यवहार में इसका प्रयोग मार्शल मैक्लूहान की पुस्तक *गुटनवर्ग गैलेक्सी* (1962) के प्रकाशन के बाद प्रारंभ हो पाया। 'ग्लोबिलज्म' भी एक नया शब्द है जो ऑक्सफोर्ड इंग्लिस डिक्शनरी के 1986 के द्वितीय संस्करण में प्रथम बार प्रकट हुआ''। एक अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण से अभिप्राय है– *प्रथम,* विश्व का एक छोटे रूप में सिकुड़ना और *दूसरा,* समग्र के रूप में विश्व में चेतना और जागरुकता का बढ़ना। वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग विभिन्न समाजों और विश्व की अर्थव्यवस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों को समझने में किया गया है। ये परिवर्तन दूसरे राष्ट्रों में प्रभावशाली तरीके से बढ़ने वाले व्यापार, निवेश और सांस्कृतिक लेन–देन के परिणाम हैं। परन्तु आज वैश्वीकरण परिचर्चा का एक मुख्य विषय बन गया है। वैश्वीकरण के नये स्वरूप 'अन्तःसम्बद्ध विश्व' और 'वैश्विक बृहद् संस्कृति' को आज एक विश्व गाँव कहा जा रहा है। *दि ग्लोबल ट्रान्सफोरमेशंस वेबसाइट* ने वैश्वीकरण को इस तरह स्पष्ट किया है – ''वैश्वीकरण को एक ऐसी उपयोगी प्रक्रिया (अथवा प्रक्रियाओं का समूह) के रूप में विचारा जा सकता है, जो सामाजिक संबंधों के स्थानीय समूहों में परिवर्तन, लेन–देन तथा अन्तर्राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राज्यीय स्तर पर गतिविधि, पारस्परिक प्रभाव और शक्ति के संजाल के प्रवाह को प्रस्तुत करती है''(हैल्ड 1999)।

विकीबुक्स ने भी वैश्वीकरण के अर्थ को और अधिक स्पष्ट किया है: "वैश्वीकरण एकीकरण की एक प्रकिया है, जो विभिन्न राष्ट्रों और लोगों को राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से एक बृहद् समुदाय में एकीकृत कर रही है"।

अतः अपने शाब्दिक अर्थ में वैश्वीकरण को परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है जो विश्व के सभी क्षेत्रों जैसे–सामाजिक, प्रौद्योगिकी, राजनीतिक, संचार माध्यमों, संस्कृति एवं पर्यावरण आदि को प्रभावित करती है और विभिन्न राष्ट्रों और लोगों को एक बृहद् समुदाय में एकीकृत कर रही है।

2. सामाजिक विज्ञान के अध्येताओं द्वारा वैश्वीकरण की परिभाषायें

प्रसिद्ध सामाजिक अध्येता एन्थोनी गिडिन्स के द्वारा वैश्वीकरण की प्रथम व्यवस्थित परिभाषा प्राप्त हुई। उन्होंने वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुये लिखा ''वैश्वीकरण सार्वभौमिक सामाजिक संबंधों का तीव्रीकरण है, जो सुदूरवर्ती स्थानों को इस प्रकार जोड़ता है कि स्थानीय घटनायें हजारों मील दूर घटित घटनाक्रमों से प्रभावित होती हैं। और इसी तरह अपने विपरीत क्रम में भी''(गिडिन्स, 1990)।

राबर्टसन ने वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुये लिखा है – ''एक अवधारणा के रूप में वैश्वीकरण संबंधित है *प्रथम,* विश्व पर दबाव और *दूसरा,* एक समष्टि के रूप में विश्व की परस्पर जागरुकता का तीव्रीकरण.....ठोस विश्वव्यापी अन्योन्याश्रितता तथा सम्पूर्ण विश्व की एक समष्टि की चेतना''(राबर्टसन, 1992)।

इसी प्रकार से क्लार्क ने वैश्वीकरण पर अपने विचारों को स्पष्ट करते हुये लिखा है ''वैश्वीकरण अन्तर्राष्ट्रीय पारस्परिक व्यवहार में विस्तार और घनीभूतता दोनों गतिविधियों का द्योतक है''(क्लार्क, 1997)।

डेविड हैल्ड ने वैश्वीकरण के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करते हुये लिखा है –''वैश्वीकरण को समकालीन सामाजिक जीवन के सभी पक्षों यथा सांस्कशतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक तथा अपराध आदि में व्याप्त विश्वव्यापी अन्तःसम्बद्धता को विस्तारित, तीव्र एवं गहन करने की एक प्रकिया के रूप में विचारा जा सकता है''(हैल्ड डेविड, 1999)।

ओहुवुनवा के अनुसार ''वैश्वीकरण को एक ऐसे क्रमिक विकास के रूप में समझा जा सकता है जो संस्कृति, वाणिज्य, संचार आदि विभिन्न क्षेत्रों और दूसरे अनेक क्षेत्रों में व्याप्त अवरोधों को हटाकर विभिन्न राष्ट्रों के बीच अन्तःक्रियात्मक अवस्थाओं (Interactive Phases) का व्यवस्थित पुनर्निर्माण कर रहा है''(ओहुवुनवा, 1999)।

बोमैन वैश्वीकरण को अलगाव और असमानता उत्पन्न करने वाला कारक मानते हैं। उनकी वैश्वीकरण की परिभाषा इस प्रकार है–''वैश्वीकरण की प्रवृत्ति मतभेद, तानाशाही और अलगाव की है, और इसी प्रकार प्रजातीय अथवा राष्ट्रीयता पृथकतावाद और क्षेत्रीय एकीकरण भी। इसीलिये, सैद्धान्तिक रूप से वैश्वीकरण की यह प्रकृति है कि यह अपनी सजातीय प्रवृत्ति के समानान्तर ही असमानता और अशान्ति उत्पन्न करेगा'' (बोमैन, 2000)।

सिंह ने वैश्वीकरण के बहुआयामी प्रभाव पर जोर दिया है साथ ही संचार माध्यमों पर इसके गहरे प्रभाव को स्पष्ट किया है। वैश्वीकरण पर अपने विचारों स्पष्ट करते हुए उन्होनें लिखा है–''वैश्वीकरण अपने वर्तमान स्वरूप में वह प्रकिया है जो न केवल विकसित राष्ट्रों के सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थानों को प्रभावित कर रही है वरन् भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों के सामाजिक ढ़ाँचे को भी परिवर्तित कर रही है"(सिंह, 2004)।

वैश्वीकरण की उपरोक्त सभी परिभाषाओं में वैश्वीकरण के समालोचकों ने इसकी गहन प्रकिया से प्रकट होने वाले इसके विभिन्न नकारात्मक और सकारात्मक प्रभावों पर जोर दिया है। इन सभी परिभाषाओं में वैश्वीकरण की विषयवस्तु और उद्देश्य दोनों दृष्टिकोणों पर बात की गई है। इन परिभाषाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण ने भौगोलिक दूरियों को समाप्त कर दिया है जो एक बड़ा महत्वपूर्ण कारक है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। वास्तव में पृथ्वी संकुचित नही हो रही है वरन सम्बन्धित दूरियाँ इसके संकुचन का कारण बन गयी हैं। इसीलिए विश्वव्यापी सम्बन्धों का संजाल स्थापित किया जा सकता है। परिणामतः लोग, सामान, वस्तुएं आदि सभी अपने भौगोलिक क्षेत्र से मुक्त हो रहे हैं। एक पूर्ण वैश्वीकृत व्यवस्था में ये सभी मुक्त रूप से विश्वभर में विचरण कर सकते हैं। इस प्रकार अब व्यक्ति और समाज को अधिक समय तक अपनी सरहदों मे सीमित और सुरक्षित नहीं रखा जा सकता।

इस प्रकार, कैथरीन वैन (2005), स्कॉल्ट (2000), एलब्रो (1990) हॉम तथा सोरनसेन (1995), मैनफ्रेड स्टीगर (2003), हैल्ड एवं मैक्ग्रा (2003) आदि वैश्वीकरण के समालोचकों ने भी उपरोक्त परिभाषाओं के समान ही कम या अधिक समतुल्य रूप में वैश्वीकरण की परिभाषाएं प्रतिपादित की हैं।

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण के आधार पर वैश्वीकरण की एक सुव्यवस्थित और प्रभावी परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि वैश्वीकरण एक बहु–आयामी और बहु–दिशात्मक प्रकिया है

जो विभिन्न राष्ट्रों और व्यक्तियों को राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से एक बृहद् समुदाय में एकीकृत कर रही है। यह एक ऐसी निरन्तर प्रकिया है, जिसके तहत क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, समाज एवं संस्कृति का समन्वय विनिमय के वैश्विक नेटवर्क से हो गया है। वैश्वीकरण दुनिया के विभिन्न देशों और लोगों का घनिष्ठ समन्वय है, जो परिवहन एवं संचार की लागतों में लाई गई भारी कमी के परिणामस्वरूप हो पाया है और इसके फलस्वरूप वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह मे कृत्रिम रूकावटें समाप्त की गयी है और अपनी सीमा के परे लोगों का आना–जाना बढ़ा है।

3. वैश्वीकरण की विशेषताऐं

वैश्वीकरण के प्रमुख सिद्धान्तकारों तथा प्रसिद्ध समालोचकों द्वारा वैश्वीकरण की अवधारणा की कुछ सुव्यवस्थित प्रतिपादनाओं का विश्लेषण करने के पश्चात् अब यह स्पष्ट हो जाता है कि वैश्वीकरण की कुछ विशिष्ट और अर्थपूर्ण विशेषताऐं हैं। उपरोक्त परिभाषाओं से वैश्वीकरण की कुछ प्रमुख विशेषताओं को चिन्हित किया जा सकता है। मैनफ्रेड स्टीगर (2003) के अनुसार वैश्वीकरण की विशेषताऐं इस प्रकार हैं –

- सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं का एक समुच्चय
- डिटेरिटोरिएलाइजेशन (Deterritorialization)
- मानवीय गतिविधियों सम्बन्धों और संजाल का विश्वभर में फैलाव
- मानवीय गतिविधियों और सम्बन्धों का तीव्रीकरण
- मानवीय गतिविधियों और सम्बन्धों के वेग का बढ़ना
- विभिन्न सामाजों पर विशिष्ट प्रभाव
- विजेताओं व पराजितों की उत्पत्ति
- रेफलेक्सिविटी (Reflexivity)

इसी भाँति डेविड हैल्ड (1999) ने भी वैश्वीकरण की चार विशेषताएं बतायीं है जो इस प्रकार हैं–

1. यह सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक गतिविधियों को राजनीति, क्षेत्रीयवाद तथा महाद्वीप की सरहदों के पार विस्तारित करता है।
2. यह अन्तःसम्बद्धता तथा व्यापार, निवेश, वित्तीय, प्रवजन आदि का तीव्रीकरण करता है।
3. विश्वव्यापी अन्तःसम्बद्धता की गहनता तथा विस्तश्तता को वैश्विक अन्तःक्रिया तथा गतिविधियों की तीव्रता से जोड़ा जा सकता है। क्योंकि विश्वभर के परिवहन तथा संचार व्यवस्थाओं के विकसित रूप ने विचारों, सूचना, मुद्रा, सामान तथा व्यक्तियों के फैलाव के वेग को बढ़ा दिया है। तथा,
4. विश्वव्यापी अन्तःक्रिया के वेग, गहनता तथा विस्तारिता को उसके गहरे प्रभाव से जोड़ा जा सकता है जैसे सूदूर घटित घटनाओं का स्थानीय जीवन पर प्रभाव तथा इसी भाँति स्थानीय घटनाओं का वैश्विक स्तर पर प्रभाव।

इस प्रकार वैश्वीकरण को अनेक अध्येताओं ने उसकी विशेषताओं को स्पष्ट करते हुये परिभाषित किया है। इन सभी विशेषताओं के आधार पर वैश्विक स्तर पर हम वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव देख पाते हैं।

4. वैश्वीकरण के आयाम

वैश्वीकरण एक बहुआयामी और बहु–दिशात्मक प्रकिया है जो विश्व के सभी समाजों को परिवर्तित कर रही है। वैश्वीकरण के विभिन्न लेखकों तथा सिद्धान्तकारों द्वारा इसके विभिन्न बिन्दुओं में अभी तक वैश्वीकरण की अवधारणा तथा उसकी प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण किया जा चुका हैं। इस प्रकार वैश्वीकरण के भी अनेक आयाम हो सकते हें। मैनफ्रेड स्टीगर (2003) ने वैश्वीकरण के अनेक आयामों का अध्ययन किया है। उन्होनें वैश्वीकरण के चार प्रमुख आयामों का परीक्षण किया है जो इस प्रकार है :–

प्रथम, राजनीतिक वैश्वीकरण; *द्वितीय,* आर्थिक वैश्वीकरण; *तश्तीय,* सांस्कृतिक वैश्वीकरण; एवं *चतुर्थ,* वैचारिक वैश्वीकरण

इसी भाँति थॉमस हॉलैंड एरिक्सन (2007) ने भी वैश्वीकरण के आठ प्रमुख आयामों का परीक्षण किया है जो इस प्रकार हैं–

- डिस्एम्बेडिंग विस्थानीयकरण सहित (Disembedding, including de-localization)
- त्वरण एवं गतिवर्धन
- मानकीकश्त
- अन्तःसम्बद्धता
- गतिशीलता
- मिश्रितता
- अतिसंवेदशीलता
- रिएम्बेडिंग (Reembedding)

इस प्रकार वैश्वीकरण के अनेक अध्येताओं द्वारा उसके विभिन्न आयामों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है और अपने भिन्न–भिन्न मत प्रकट किये गये हैं। वैश्वीकरण के इन सभी आयामों के अध्ययन एवं विश्लेशण के आधार पर वैश्विक स्तर पर हम वैश्वीकरण का स्पष्ट प्रभाव देख पाते हैं।

5. वैश्वीकरण की अध्ययन पद्धतियाँ

वैश्वीकरण के विभिन्न लेखकों तथा सिद्धान्तकारों द्वारा इसकी विभिन्न अध्ययन पद्धतियों का विश्लेषण किया जा चुका हैं। इस प्रकार वैश्वीकरण की भी अनेक अध्ययन पद्धतियाँ हो सकती हैं। मोटे तौर पर वैश्वीकरण को परिवर्तन की एक ऐसी प्रकिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो विश्व के सभी क्षेत्रों जैसे – सामाजिक, प्रौद्योगिक, राजनीतिक, संचार माध्यमों, संस्कृति एवं पर्यावरण आदि को प्रभावित करती है। वैश्वीकरण के अन्तःसम्बद्धता वाले पक्ष पर प्रायः सभी विद्वान सहमत हैं परन्तु उसके अन्य पक्षों को लेकर उनमें भारी मतभेद देखा जा सकता है। इन्हें प्रमुख रूप से मुख्य तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है।

- अतिवैश्वीकरणवादी पद्धति
- अतिसंशयवादी पद्धति
- रूपान्तरणवादी पद्धति

अतिवैश्वीकरणवादी पद्धति

इनके अनुसार वैश्वीकरण एक नये युग का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकिया के अन्तर्गत विश्व स्तर पर सभी प्रकार के सम्बन्धों का एकीकरण राष्ट्रों की सीमाओं का एकीकरण करते हुए हो रहा है। जिससे धीरे–धीरे उनका महत्व घट रहा है। पूंजी, उत्पादों, विचारों व व्यक्तियों का राष्ट्रीय सीमाओं से परे बढ़ता हुआ प्रवाह इस नवीन युग के आगमन में एक महत्वपूर्ण कारक की भूमिका निभा रहा है। इस श्रेणी के विद्वानों को पुनः दो उप–श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। सकारात्मक अतिवैश्वीकरणवादी तथा नकारात्मक अतिवैश्वीकरणवादी।

अ) सकारात्मक अतिवैश्वीकरणवादी विद्वानों का मत है कि खुली विश्व बाजार व्यवस्था विश्व के सभी राष्ट्रों में अधिकतम आर्थिक वृद्धि उत्पन्न कर देगी जिससे सभी वर्गों के जीवन में सुधार ही आयेगा। ओहमे (1991) इस श्रेणी के प्रमुख विद्वान हैं।

ब) नकारात्मक अतिवैश्वीकरणवादी विद्वान वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों को रेखांकित करते हुए इस पूर्ण रूप से निरस्त करते हैं। इस श्रेणी में प्रायः नव–मार्क्सवादी एवं आलोचनावादी सिद्धान्तकार आते हैं। (मार्टिन एवं श्रूमैन 1997, रीच 1991, बैक 1997, श्नेपर 1994 वाइजमैन 1997, होपकिन्स एवं वालेरस्टीन 1996)

अतिसंशयवादी पद्धति

इस श्रेणी के विद्वान मुख्यतः वैश्वीकरण के आर्थिक पक्ष पर बल देते हैं। तथा उनका तर्क है कि इस आर्थिक एकीकरण की प्रकिया में कुछ भी नया नहीं है तथा वे इसकी तुलना प्रथम विश्वयुद्ध से पहले के विश्वव्यापी व्यापार संबंधों से करते हुये वैश्वीकरण के स्थान पर 'अन्तर्राष्ट्रीयकरण' शब्द के उपयोग को अधिक उचित मानते हैं। इनका यह भी मानना है कि राष्ट्रों की भूमिका में किसी प्रकार की कमी नहीं आने वाली है। तथा वे पहले की भांति ही सुदृढ़ रहेंगे। (हिर्स्ट एवं थाम्पसन 1996, वीज़ 1997)

रूपान्तरणवादी पद्धति

रूपान्तरणवादी विद्वानों का दृष्टिकोंण प्रथम दो श्रेणियों के विद्वानों की तुलना में अधिक व्यापक है। इनके अनुसार विश्व के विभिन्न देशों में हो रहे प्रमुख सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तनों की पृष्ठभूमि से संचालित करने वाली केन्द्रीय भूमिका वैश्वीकरण की है जिसका उद्भव तकनीकी, आर्थिक, गतिविधियों, शासन, संचार आदि क्षेत्रों में ही रही निकट रूप से अंतः सम्बन्ध परिवर्तनों के फलस्वरूप हुआ है। इन क्षेत्रों में हो रहे विकास एक दूसरे को मजबूती प्रदान करने वाले हैं अथवा इतने लचीले हैं कि यह कहना अत्यधिक कठिन हो जाता है कि इनमें से किसे कारण माने और किसे परिणाम ? वस्तुतः वैश्वीकरण की प्रकिया ऐतिहासिक क्षेत्रों में राष्ट्रीय सीमाओं से परे होने वाले प्रवाह सभी राष्ट्रों को एक विश्वव्यापी व्यवस्था के अन्तर्गत एकीकृत कर रहे हैं।

उपरोक्त विवेचना से यह प्रश्न उठता है कि आखिर इन विद्वानों में कौन सत्यता के अधिक निकट है ? इस विषय में रूपान्तरणवादी विद्वानों का मत सत्यता के अधिक निकट प्रतीत होता है। वैश्वीकरण की प्रकिया वास्तव मे मात्र आर्थिक स्तर पर हो रही प्रघटना नहीं कही जा सकती यह विभिन्न देशों मे सामाजिक जीवन के सभी पक्षों को किसी न किसी रूप में प्रभावित कर रही है। अतिवैश्वीकरणवादी व अतिसंशयवादी दोनों ही इसे समझने मे असफल रहे हैं।

अतः कहा जा सकता है कि अतिवैश्वीकरणवादी तथ अतिसंशयवादी दोनों ही प्रकार के विद्वानों ने वैश्वीकरण की प्रकृति को समझने में भारी भूल की है। वे न तो वैश्वीकरण की धारणा को समझ पाये है और न ही सम्पूर्ण विश्व पर होने वाले इसके प्रभावों को क्योंकि वे इसे पूर्ण रूपेण आर्थिक घटना मानते हैं।

6. निष्कर्ष

वास्तव में वैश्वीकरण एक बहुपक्षीय प्रकिया है। इसका गंभीरतापूर्वक विश्लेषण करने से पता चलता है कि आज विश्व व्यापार का स्तर पहले की तुलना में काफी अधिक है तथा इसमें सम्मिलित वस्तुओं और सेवाओं की परिधि बहुत अधिक व्यापक है। इस दृष्टि से वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था को क्रांतिकारी कहा जा सकता है तथा इस प्रकृति के कारण यह विश्व के किसी भी देश की ठोस से ठोस अर्थव्यवस्था को पलक झपकते ही अस्थिर करने में सक्षम है। अतः कहा जा सकता है कि अतिवैश्वीकरणवादी तथ अतिसंशयवादी दोनों ही किस्म के विद्वानों ने वैश्वीकरण की प्रकृति को समझने में भारी भूल की है। वे न तो वैश्वीकरण की धारणा को समझ पाये है और न ही सम्पूर्ण विश्व पर होने वाले इसके प्रभावों को क्योंकि वे इसे पूर्ण रूपेण आर्थिक घटना मानते हैं। वास्तव में वैश्वीकरण तकनीकी राजनीतिक तथा सांस्कृतिक होने के साथ–साथ आर्थिक भी है। इसका क्षेत्र आज केवल विकासशील देशों तक ही सीमित नहीं रह गया है अपितु इससे पश्चिमी जगत के सभी देश भी प्रभावित हो रहे हैं। वैश्वीकरण को गतिवान बनाने में नवीन संचार प्रोद्योगिकी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वास्तव में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से आ रही इस क्रांति ने समाज के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

स्टिग्लिटज, जोसेफ ई. 2003: *ग्लोबलाइजेशन एण्ड इटस डिसकंटेंटस्*, न्युयार्कः नार्टन एण्ड कंपनी।

सिंह, वी.पी., 2004: "ग्लोबलाइजेशन, न्यू मीडिया टैक्नॉलाजी, एण्ड सोशियो कल्चरल चेंजिज इन इंडिया", *इमर्जिंग ट्रेंडस इन डेवलपमेंट रिसर्च*, वोल्यू. 10, नं. 1–2, पश. 3–9।

न्यू वर्ल्ड एनसाइक्लोपेडिया, *ग्लोबलाइजेशन*, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.न्यूवर्ल्डएनसाइक्लोपेडिया.ओआरजी।

दि ग्लोबल ट्रान्सफोरमेशंस वेबसाइट, *ग्लोबलाइजेशन*, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.दिग्लोबलट्रान्सफोरमेशंस.ओआरजी।

हेल्ड, डेविड, मैकग्रयु, ए., गोल्ड ब्लेट., डेविड तथा पेरेटन जे. 1999: *ग्लोबल ट्रांसफॉरमेशंस– पालिटिक्स, इकोनोमिक्स एण्ड कल्चर*, केम्ब्रिजः पालिटी प्रेस।

विकीबुक्स, *कल्चरल एंथ्रोपालिजी/ग्लोबलाइजेशन एण्ड माइग्रेशन*, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.विकीबुक्स.ओआरजी।

गिडिन्स, एन्थनी, 1990: *ग्लोबलाइजेशन, डॉयरेक्टर्स लेक्चर*, 10 नवम्बर 1999, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.आइएसई.एसी.इन।

राबर्टसन, रोलेण्ड, 1992: *ग्लोबलाइजेशनः सोशल थियोरी एण्ड ग्लोबल कल्चर*, सेज पब्लिकेशंस।

क्लार्क, आई, 1997: *ग्लोबलाइजेशन एण्ड फ्रैगमेंटेशन*, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ओहुवुनवा, माजी एस आई, 1999: *द चैलेंजिज ऑफ ग्लोबलाइजेशन टू द नाइजीरियन इण्डस्ट्रीयल सेक्टर*, नाइजीरियन ट्रिब्यून, 14 दिसम्बर 1999, पश. 20–21।

बोमन, जे. 2000: *ग्लोबलाइजेशनः द हयूमन कोंसीक्वैंसिज*, न्युयार्कः कोलंबिया युनिवर्सिटी प्रेस।

वॉर्मर, कैथरीन वैन, 2005: *कन्सेप्ट फोर कंटेम्परेरी सोशल वर्कः ग्लोबलाइजेशन, अप्रैसन, सोशल एक्सक्लूजन, हयूमन राइट आदि*, एस डब्ल्यू एण्ड ई न्यूज मैगजीन, वोल्यू. 2, नं. 1।

स्कॉल्ट, जे. 2000: *ग्लोबलाइजेशनः अ क्रिटिकल इंट्रोडक्शन*, न्युयार्कः पलग्रेव मैकमिलन।

एलब्रो, मार्टिन एवं ऐलिजाबेथ किंग, 1990: *ग्लोबलाइजेशन*, नालेज एण्ड सोसायटी, लंदनः सेज।

हॉम, हंस हेनरिक तथा जार्ज सोरनसेन, 1995: इंट्रोडक्शनः वॉट हैज चेंज्ड इन हॉम, हंस हेनरिक तथा जार्ज सोरनसेन संपादित, *हूज वर्ल्ड आर्डर ? अनइवन ग्लोबलाइजेशन एवं द एण्ड ऑफ कोल्ड वार*, बोल्डर कंपनीः वेस्टव्यूज।

स्टीगर, मैनफ्रेड, 2003: *ग्लोबलाइजेशनः अ वेरी शार्ट इंट्रोडक्शन*, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।

एरिक्सन, थॉमस हॉलैंड, 2007: *ग्लोबलाइजेशनः द की कंसेप्टस,* आक्सफोर्डः बर्ग।

टोहमे, केनीची, 1991: *द बार्डरलेस वर्ल्ड,* न्यूयार्कः हार्पर कोलिंस

मार्टिन, हंस पीटर एवं हैराल्ड श्रूमैन, 1997: *द ग्लोबल ट्रैपः ग्लोबलाइजेशन एण्ड द असाल्ट ऑन प्रोसपेरिटी एण्ड डेमोक्रेसी,* न्यूयार्कः जेड बुक्स एण्ड प्लूटो प्रेस आस्ट्रेलिया।

रीच, राबर्ट बी., 1991: *द वर्क ऑफ नेशंस,* लंदनः सिमोन एण्ड सूटार।

बैक, उलरिच, 1997: *वॉज इट ग्लोबलाइजर्स ?* फैंकफर्टः सूहकैम्प

श्नेपर, डोमीनिकी, 1994: *ला कम्यूनॉट डेस सिटोयेंस.* पैरिसः गलीमार्ड।

वाइजमैन, जॉन 1997: *अल्टरनैटिव्ज टू ग्लोबलाइजेशनः एन एशिया पेसिफिक पर्सपेक्टिव,* मेलबोर्नः कम्यूनिटी एड अब्रोड।

होपकिन्स, टेरेंस के., एवं इमैनुअल वालेरस्टीन, 1996: *द ऐज ऑफ ट्रांजिसनः ट्रेजेक्टरी ऑफ वर्ल्ड सिस्टम,* 1945–2025, लंदनः जेड बुक्स।

हर्स्ट, पॉल, एव ग्राहम थाम्पसन, 1996: *ग्लोबलाइजेशन इन क्वैश्चन,* कैमब्रिजः पोलिटी।

वीज़, लिंडा, 1997: *ग्लोबलाइजेशन एण्ड द मिथ ऑफ द पावरलैश स्टेट,* न्यू लेफ्ट रिव्यू, 225:3–7।